IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

'महायोगी गुरु गोरक्षनाथ के दर्शन में व्यष्टि-पिंड का स्वरूप'

डॉ. गोविन्द प्रसाद मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, (म.प्र)

शोध सार

अपने समय में प्रचलित युग प्रवाह को मोड़कर परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने वाले , तत्कालीन विचार, दर्शन व मत मतान्तरों के प्रवाह परिमार्जित कर उसके भीतर से सार्वयुगीन समग्र तत्व को प्रकट करने वाले दार्शनिक चिंतन से परिपूर्ण, योग मार्ग के उन्नायक महान सिद्ध योगी गुरु गोरक्षनाथ, नाथ सम्प्रदाय के प्रथम उत्कर्ष प्रदाता व शास्त्र प्रसिद्ध 84 सिद्धों में से एक ,उच्च कोटि के परम सिद्ध योगी हैं जिन्हें "गोरक्षनाथ सिद्ध सिद्धान्त संग्रह " ग्रंथ नामक में 'चतुरशीति सिद्धा :' वाक्य से सम्बोधित करते हुए नाथ योग सम्प्रदाय की गुरु परम्परा का प्रवर्तन कर्ता कहा गया है। नाथ योगियों का विश्वास है कि नाथ पंथ के प्रवर्तक आदि नाथ स्वयं भगवान शंकर हैं और गुरु गोरक्षनाथ भी शिव स्वरूप हैं। इसी कारण भक्तजनों ने उन्हें 'ॐ शिव गोरक्ष ' कहकर भी सम्बोधित किया है ।

नाथ सम्प्रदाय में योगी का लक्ष्य केवल समाधि की अवस्था में पहुँच कर दुःखों से निवृत्ति व परमात्मा की प्राप्ति ही नहीं है बल्कि स्वयं को सम्पूर्ण ब्रह्मांड में और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को स्वयं में अनुभूति की प्राप्ति है जिसे 'सामरस्य' सिद्धान्त कहते हैं।

गुरु गोरक्षनाथ के दर्शन में मानव शरीर को अधिक महत्त्व दिया गया है क्योंकि शरीर के माध्यम से ही योग साधक परमादर्श सामरस्य की प्राप्ति कर सकता है। नाथ पंथ में मानव शरीर को व्यष्टि पिण्ड की संज्ञा दी गई है और कहा गया है कि यह व्यष्टि पिण्ड , ब्रह्मांड का ही सूक्ष्मरूप है। जो कुछ भी ब्रह्माण्ड में है वह सब इस मानव शरीर में सूक्ष्म रूप से विद्यमान है। नाथ योग परम्परा में व्यष्टि पिण्ड और ब्रह्मांड में अभिन्नता की अनुभूति ही योग का परम लक्ष्य है, यही परमादर्श है , समरसीकरण है, यही मोक्ष है, असंग शिव स्वरूप की अनुभूति है । इस परम अनुभूति समरसता की प्राप्ति हेतु गुरु कृपा व शरीर शुद्धि या घट शोधन परम आवश्यक है जिसके लिए गोरक्षशतक में षडंग योग साधना का विधान है।

अन्य सहायक सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लोक भाषा संबर्द्धन में नाथ पंथ का योगदान | सम्पादक- डॉ प्रदीप कुमार राव , प्रकाशक – गुरु श्री गोरक्ष नाथ शोध एवं अध्ययन केंद्र , महराना प्रताप पी.जी.कालेज, जंगल धूसड , गोरखपुर ,2019.

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, January 2023
Impact Factor: 7.301

2. गोरक्ष सिद्धांत संग्रह , सम्पादक- गोपी नाथ कविराज, गवर्नमेंट संस्कृत लाइब्रेरी, बनारस 1925 .
3. गोरखबानी , सम्पादक और टीकाकार – डॉ पीताम्बर बड़थ्वाल , हिंदी साहित्य सम्मलेन , प्रयाग 2003 .
4. नाथ सम्प्रदाय – डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ,हिन्दुस्तानी एकडमी , इलाहाबाद (उ.प्र.)